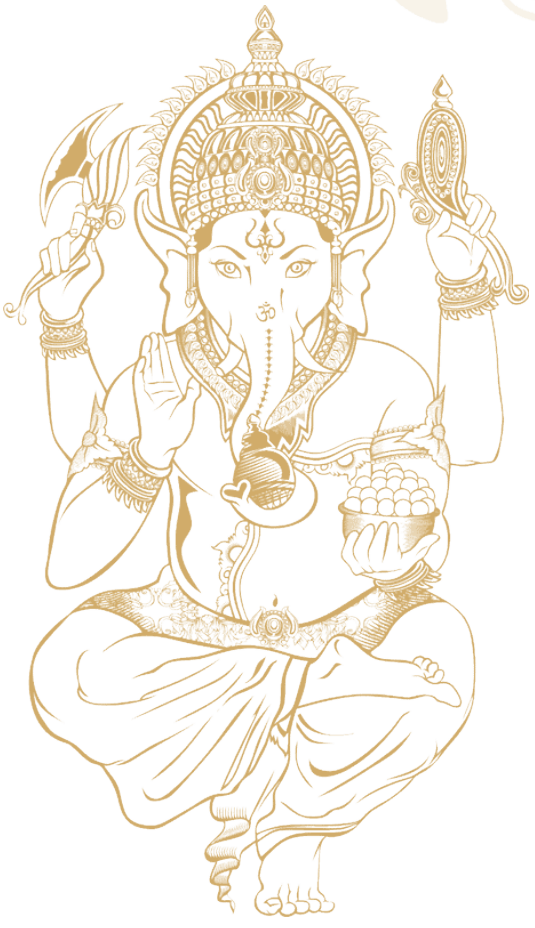

Yash Bhavya

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120486502

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/07/1998	जन्म तिथि	01/05/2002
मंगलवार	दिन	बुधवार
घंटे 15:29:00	जन्म समय	17:50:00 घंटे
घटी 24:46:54	जन्म समय(घटी)	30:12:20 घटी
India	देश	India
Alwar	स्थान	Delhi
27:32:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
76:35:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:40	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:34:14	सूर्योदय	05:40:56
19:22:33	सूर्यास्त	18:56:05
23:50:03	चित्रपक्षीय अयनांश	23:53:05

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
बुध 7वर्ष 5मा 5दि	29:53:09	तुला	लग्न	तुला	03:41:15	शुक्र 18वर्ष 1मा 23दि
शुक्र	21:15:51	मिथु	सूर्य	मेष	17:03:49	सूर्य
11/12/2012	24:10:17	वृश्चि	चंद्र	धनु	14:34:08	23/06/2020
11/12/2032	06:52:11	मिथु	मंगल	वृष	18:09:51	24/06/2026
शुक्र 12/04/2016	15:48:29	कर्क	बुध	वृष	07:35:53	सूर्य 11/10/2020
सूर्य 12/04/2017	04:02:28	मीन	गुरु	मिथु	17:07:30	चन्द्र 12/04/2021
चन्द्र 12/12/2018	21:30:46	वृष	शुक्र	वृष	13:07:36	मंगल 17/08/2021
मंगल 11/02/2020	08:29:07	मेष	शनि	वृष	19:40:46	राहु 12/07/2022
राहु 11/02/2023	08:39:08	सिंह व	राहु	वृष	24:29:40	गुरु 30/04/2023
गुरु 12/10/2025	08:39:08	कुंभ व	केतु	वृश्चि	24:29:40	शनि 11/04/2024
शनि 11/12/2028	17:57:11	मक व	हर्ष	कुंभ	04:31:27	बुध 16/02/2025
बुध 12/10/2031	07:22:31	मक व	नेप	मक	17:03:26	केतु 24/06/2025
केतु 11/12/2032	11:52:15	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	23:17:32	शुक्र 24/06/2026

लग्न-चलित

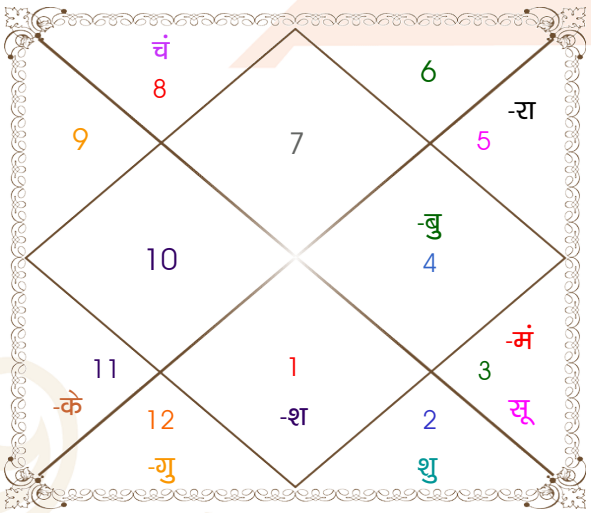

लग्न-चलित

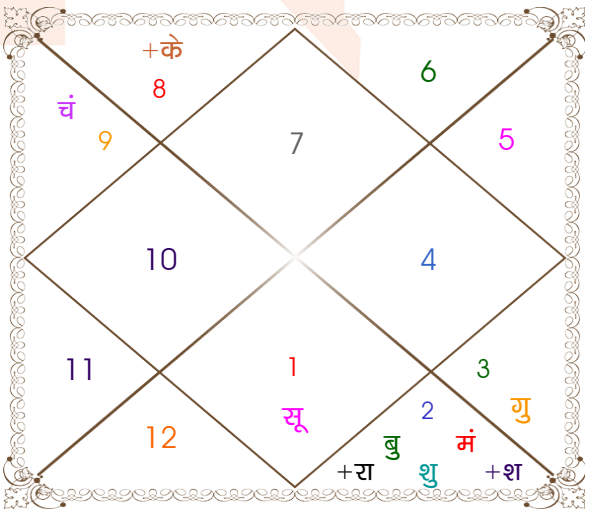

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	धनु	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	18.50		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

लैे का वर्ग मृग है तथा ठींअलं का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार लैे और ठींअलं का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

लैे मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

ठींअलं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु ठींअलं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु लैे कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता

है।

लैं तथा ठींअलं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।